

4.

ॐ
श्री वृहत् निर्वाण विधान
(कविवर जगतराम जी कृत)
श्री वर्धमान निर्वाण पूजा
दोहा

त्रिशला सिद्धारथ तनुज, नाथवंश वर पाय। महावीर जिन-चरणयुग, मोकों होहु सहाय।।१।।
महावीर ने जा समै, गमन कियो शिवखेत। सोई समय विचारकै, पूजै सुधी स्वहेत।।२।।
ओं ह्रीं श्री महावीरातिवीरसन्मतिवर्धमानादिकानेकनामसंयुक्त भगवज्जिनेन्द्र! अत्रावतर अवतर
सम्बौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधकरणम्।

(चौपाई)

मंगल निर्वाणक, महावीर, प्रात समै पूजो भवि धीर।
दस अतिशय जनमत जिनपाय, केवलज्ञान माहिं दसगाय।।
तिनि जिनवर प्रति चरनन ओर, वे जलधार जुगल कर जोर।
मंगल निर्वाणक महावीर, प्रातः समय पूजो भविधीर।।
ॐ ह्रीं श्री निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।
जिनके सुरकृत चौदह सार, ये अतिशय चौंतीस चितार।
तिन जिनवर प्रति पूजनधारि, भ्रमरलुब्ध वरचन्दन गार।।
मंगल निर्वाणक महावीर, प्रातः समय पूजो भविधीर।।
ॐ ह्रीं श्री निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।
अष्ट प्रातहारजजुत देव, जिनकी करें इन्द्रशत सेव।
तिनजिनवर प्रतिमा अवलोक, लेवर शालि अखण्डितपोख।।
मंगल निर्वाणक महावीर, प्रातः समय पूजो भविधीर।।
ॐ ह्रीं श्री निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।
चार अनन्त चतुष्टय सार, ये गुण छयालीस हैं जगतार।
श्री जिनप्रतिमा पूजों सार, ले वर सुमन विविध परकार।।
मंगल निर्वाणक महावीर, प्रातः समय पूजो भविधीर।।
ॐ ह्रीं श्री निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
क्षुधातृषादि आठ-दश-दोष, हरत शिवगवर भवदधि सोस।
तिनि जिनवर प्रतिबिम्ब निहार, पूजनको भरिनेवज थार।।
मंगल निर्वाणक महावीर, प्रातः समय पूजो भविधीर।।
ॐ ह्रीं श्री निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक भेद जिनगाय, जीव अजीव तत्त्व दरसाय।
तिन प्रतिबिम्ब निरख निजहेत, दीपक ले निर्मल अतिचेत॥
मंगल निर्वाणक महावीर, प्रातः समय पूजो भविधीर॥
ॐ ह्रीं श्री निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।
मिथ्याभ्रमकर भ्रमे अनादि, जगतजीव जग में बहु बादि।
तिनको शिवगति सार बताय, तिनप्रति धूप दशांग चढाय॥
मंगल निर्वाणक महावीर, प्रातः समय पूजो भविधीर॥
ॐ ह्रीं श्री निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।
जिनवृष उपदेशो हितकार, चलो जात अब ताई सार।
परमत खण्डन-मण्डन लोक, तिनप्रति लेफल चरणन ढोक॥
मंगल निर्वाणक महावीर, प्रातः समय पूजो भविधीर॥
ॐ ह्रीं श्री निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।
जिनके समोशरण में साध, चौदह सहश एकदश बाध।
ऐसे जगत प्रभु पद पाय, ले जलादि पूजों जिनराय॥
मंगल निर्वाणक महावीर, प्रातः समय पूजो भविधीर॥
ॐ ह्रीं श्री निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

पुष्पोत्तर तजि धवल, जु छट्ट अषाढ की। उत्तर फाल्गुन माहिं, बसे वर मायकी॥
अवधि अमरपति जान, रतन बरसाइयो। कुन्दनपुर हरि आय, सु मंगल गाइयो॥
ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलमण्डिताय महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

दिवस पंचदस मास वसु, बरस पचत्तर सार। रहे जु चौथे काल के, वीर लियो अवतार॥

(सुन्दरी छन्द)

शुक्लचैत्र चतुर्दशि के दिना, नखत उत्तराफाल्गुन सुन गना।
सजिगजेन्द्र गिरीन्द्र न्हवाइयो, लखि जिनेन्द्र सुमंगल गाइयो॥

दोहा

मृगपति का पगचिन्ह तसु, तन उत्तुंग कर सात। हेमवरण जिनबिम्ब नित, पूजहुँ भव्य प्रमात॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदशीदिने जन्ममंगलप्राप्ताय महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

आयु बहत्तर बरस, कुंवरपद तीस जू। सो लखि अथिर उदास, भये जगदीश जू॥
करि लौकान्तिक देव, सुथिर निज थल गये। रचि शिविका झठ नव्य, प्रभू तामें लये॥
पुरतें निकट न दूर, मनोहर बन गये। चन्द्रकान्ति मणिमयी, शिलालखि सुर ठये॥

शिविकार्ते, पधराय, तहाँ सुरगण खड़े। दुविध परिग्रह त्याग, प्रभु समरस बड़े॥
प्राची दिशि सन्मुख, पद्मासन माँड़िके। नमः सिद्ध कहि, पञ्चमुष्टि कच काढिके॥
निज आतम समदेव, सिद्ध सब साख दे। त्रयोदश विध चारित्र, धरयो अभिलाख दे॥
मगसिर मास दसैं सुदि, जनम नखत परो। ता दिन परम दिगम्बर, पद प्रभु जी धरो॥
साल विटप तर बैठि, बेर अपराहिनी। दीक्षा गही मिलाय, शीघ्र शिव भामिनी॥

दोहा

जिन शिरकेश पवित्र अति, रतन पिटारे धार। क्षीरोदधि पधराय हरि, निजथल गये नृतकार॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा

तन ममत्व तजि विश्वपति, शिलापट्ट वर पाय। आरूढे तप धरत ही, चौथो ज्ञान उपाय॥
अजर अमर अव्यक्त जो, अजपा ताको ध्याय। ध्यानसिद्धि के अर्थ प्रभु, अचल मेरुसम थाय॥
गुप्ति तीन गढ़ तुल्य भये तिनके महा। संजम बख्तर तुल्य भये कहना कहा॥
कर्म-शत्रु जीतन की रुचि लागी तबै। गुण अनेक सेना भट होत भए तबै॥
अनशनादि तप धारिजु द्वादश भाति जी। ध्यान विषैं सुविशेष शुद्धता पाय जी॥
अट्ठावीस मूलगुण अग्रेसुर कहे। कर्म प्रवल अरि तिनहिं जीतने प्रभु बड़े॥

(गीतिका छन्द)

लेश्याशुक्ल गजराज चढ़ि के, भूप अनुप्रेक्षा दुके।
धाय धर्म-कृपाण गहि अरि, महि-सेना पर झुके॥
उत्कृष्ट जिन परिणाम, कटकतनी सुरक्षा कारनै।
वर ज्ञानरूप प्रधान, अग्रेसुर कियो जगतारने॥

(अडिल्ल)

अति विशुद्ध परिणाम सैन्यपति छाड़यो। रागादिक अरि हनन प्रबल उद्यम कियो॥
ध्यान जतन कर मूल प्रगट कर तन्त्र के। करे चलाचल वीर जिनेश्वर सत्र के॥
अधःकरन के भाव जो प्रथमहिं भाय के। हो परिणाम न अन्य क्षपक दिश जाय के॥
शुक्ल ध्यान असि प्रथम ध्याय ता करम ले। प्रबलमोह करि घात, जाय बारम थले॥

(गीतिका छन्द)

ता थलैं दूजे शुक्ल बल त्रय, घातिया हनि जय लयो।
चढ़ि तेर मैं गुणस्थान श्रीजिन, समोसरन विभो ठयो॥
रचि कोट वेदी भूमि पर मध, थंम तूपादिक(?)जहीं।
जोजन प्रमान जु सोभगी, निरवार पद पूजत तहीं॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥
करत विहार जिनेश भविक उपदेशते। सकल संघ कर युक्त चरम तीर्थेश ते॥

नाना विध अतिशय कर युक्त प्रभू तहाँ। आनि विराजे विपुलाचल पर्वत जहाँ॥
जहाँ दिव्यधुनि प्रतिशब्द जय जय सभामण्डप भवन में।
धर्मोपदेश सो आइयो, तिन निकट निर्वानक समै॥
तब सुर असुर इन्द्र करि, अर्चित सवकार जानकें।
पावापुरी उद्यान सार, तहाँ पधारें आन कैं॥
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति
स्वाहा।

इत्युच्चार्य कर्णिकायां पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(रागविलावल)

प्रकृति सात महावीर प्रभू जिन प्रथम विदारी।
तीन आठ जे भानि के, नव छत्तीस सिधारी॥
दस में लोभ द्वादशें, सोलह तहाँ जु टारी।
त्रेसठ प्रकृति खिपाइयो, तिन जिन की बलिहारी॥१॥

दोहा

सैतालिस प्रकृति हनी, कर्म घातिया वीर।
नाम तीनदश आयु त्रय, नाशि भये महावीर॥२॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणप्राप्ताय महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला - दोहा

पंच नामधर ते सुगुरु, पावापुर वन आय। शेष करम रिपु जीतने, शिवमग चलन उपाय।

(छन्द मात्रिक)

आये जहाँ त्रिजगपति, ध्यान कीनो महा। तृतीय पद शुक्ल माड़ो, सुहानो तहाँ॥
तब प्रभू दिव्यध्वनि, शब्द-रहिते भये। अन्त के दिवस वा-की, चतुर्दश रहे॥
प्रभु गये उल्लङ्घि कर, तेर गुणस्थानतैं। चढ अजोगे शुक्ल, तुरिये पद ध्यानतैं॥
जोग सु निरोध करि, चरम-जुग समय जे। हनि बहतर चरम, समय त्रयोदश जजे॥
चौद में अन्त सु अघातिया जय लई। चेतना शक्ति वर ज्योति परगट भई॥
भांति यों अष्ट अरि कर्मदल हनि गये। उर्ध्व जिन गमन कर शिवपुरी थिर गये॥
पक्षवर भ्रमर, कार्तिक अमावस दिना। स्वातिवर नखत परभात समया गिना॥
लोक के शिखर जिनदेव आरूढ़ियो। सुख अनन्तो निरन्तर जहाँ पूरियो॥
मोह अरि बीस वसु प्रकृति जुत क्षय कियो। प्रथम क्षायिक सम्यक्त्व गुन प्रगटियो॥
पंच भट सहित ज्ञानावरन चूरियो। तब अनन्तो दुतिय ज्ञानगुन पूरियो॥
दर्शनावरण नव प्रकृति जुत दलमलो। तब अनन्तो सुदर्शन तृतीय गुन मिलो॥
अन्तराय कराय जा पंच भटन जुत हनो। तब तुरिय वीर्य गुन जिन अनन्तो बनो॥

(पद्धरी छन्द)

तेरानव भट जुत नाम मार, पंचम सूक्ष्म गुण प्रगट सार।
चवकटक सहितकर आयुनाश, छटवाँ अवगाहन गुन प्रकाश॥
हनि गोत्र करम को जोर ताय, सातम जु अगुरुलघु गुण उपाय।
जिन युगल वेदनी घाति पाय, गुण अष्टम अव्यावाध पाय॥
इन आदि अनन्तें गुन समाज, पायो प्रभु मुक्तिपुरी स्वराज।
तबही सुरेश बल अवधि पाय, निजसेन साज सब देव आय॥
तादिन वह पुरी प्रकाशरूप, दीपन समूह करके अनूप।
धरती आकाश सब दिशनि मांहि, दीपक माला प्रजुलित लखांहि॥
तब परमौदारिक प्रभु शरीर, मंगल पंचम लखि सुर गहीर।
शुभगन्ध पहुप आदिक मनोग, वसु द्रव्यनिकर पूजा नियोग॥
फिर चन्दन अगरादिक लियाय, तब वर उतुंगसुर सब रचाय।
जिनतन मंगलमय तहँ सचाय, तब अग्निकुमार सुशीश नाय॥
तिन मुकुटनि करि ज्वाला उठाय, भस्मीकृत शबसब होत तहाय।
सब सुर जय-जय कर तासु ओर, उर आनद परम सुभक्ति सोर॥
तब प्रथम इन्द्र आदिक सुराय, कर भस्म वन्दना सीस नाय।
कहते यह पुरुषोत्तम महान, बर धर्म तीर्थनायक सुजान॥
सो देखो अस्त भयो दिनेश, अब मिथ्यातम भ्रमकर प्रवेश।
ये प्राणी वृषतें विमुख होय, करके निज इच्छा मार्ग सोय॥
जग में सु प्रवरतेंगे विशाल, इमि पश्चिम (?) सुरगण भक्तिमाल।
अपनी पवित्र लखि अमरराय, पुनिकर पूजा निजथान जाय॥
तादिनतें अब या भरत खेत, दीपावलिका प्रगटी उपेत।
प्रति वर्ष भव्य पूजा कराय, निर्वाण समय उत्सव सु पाय॥
पीछे सुन नर नारिन समाज, कर मोदक ले परिवार साज।
अति आनन्द मंगल निरतसोय, कीनोंतिन अतिही कहसुकोय॥
ते सन्मति मति दे अरज येह, तुम करुणासागर विमल नेह।
भटके बहुकाल अनन्त बादि, तुम बिन कृपालु जगमें अनादि॥

(अडिल्ल)

या भव-वन के मांहि, बहुत दुख पाइयो। जानो ज्ञान प्रसाद, तुमहिं तट आइयो॥
ताते कहने मांहि, कछू आवे नहीं। वांछितार्थ पद तुम कर, पाऊँ प्रभु सही॥
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय महावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीतिका छन्द)

या भांति निर्वाणक सु पूजन, समय की जो विधि कही।

सो नय प्रमाण के न्याय करि, भव्य तुम जानौं सही॥
यह समय लखि जिन पूज उत्सव, करन भक्ति जु वश सही।
दुर्गतिहरण सुखहेत भवि, करिये परमरुचि कर सही॥

दोहा

तीन बरस वसुमास दिन, पंद्रह रहे सु सार। महावीर शिवपुर गये, चौथे काल मँझार।
ऊँ ह्रीं निर्वाणकल्याणप्राप्ताय महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणकाड विधान के बाद है -

(त्रिभंगी छन्द)

श्री वीर जिनेसुर, नमत सुरेसुर, वसु विधिकर जुग पद चरचं।
वहु तूर बजावें जिनगुन गावें, ध्यावें पावें मुक्तिपदं॥

इत्याशीर्वादः

ऊँ ह्रीं निर्वाणमंगलमण्डितमहावीरजिनेन्द्राय नमः।

(इस मन्त्र का 108 जाप्य देना चाहिए)

वर्तमान चतुर्विंशतिजिन-निर्वाणभूमि पूजा

दोहा

मंगलकारी सर्व जिन, दाता परम चितारी। फलद रचाकर चित हम, पूजत कर सिर धारि॥1॥

(अडिल्ल)

दीप अढाई माहिं, मेरुपन सोभिते। पंच विदेह सु भूमि, तहाँ मन मोहते॥
तिन मधि तीर्थकर, मंगल सुखदाय जी। रहें सदा जहाँ इन्द्र, जजें शिरनाय जी॥

(गीतिका छन्द)

शिरनाय सुरगण खग नरेश्वर, करें महोत्सव नित नये।
परिवार युत भर पुण्यकोष, प्रतच्छ लखि श्री जिन जये॥
विहरंत केवल गणधरादिक, करत वर उपदेशते।
तहँ सुनहिं अति रुचि धारि-भविजन, त्यागगृहतप करहिं ते॥3॥

(अडिल्ल)

कालचतुर्थम सार, सदा वरते जहाँ। यति श्रावकद्वय धर्म चले शाश्वत वहाँ॥
तीर्थाधिप चक्री, हलिहरि प्रतिहरि घने। उपजे पुरुष अनूप, जहाँ शिवमग बने॥4॥

दोहा

जहाँ न मिथ्यामारगी, एक धरम अरिहन्त। इन्द्रादिक आवें जहाँ, करे भक्ति भगवंत॥5॥
भरतैरावत दश विषे, कालचक्र द्वय जोग। तामधि जम्बूद्वीप यह, दक्षिण भरत मनोग॥6॥

(अडिल्ल)

अब इस पंचमकाल, पाय इस क्षेत्र सो। विद्यमान तीर्थकर, मंगल नाहिं सो॥

ताते परम उछाह, सुमन बचसो रचो। सिद्धभूमि थल पाय, हरष पूजा सुचो॥७॥
 वृषभनाथ जिन आदि, वीर पर्यन्त जी। चौबिस सब इस क्षेत्र, भये भगवन्त जी॥
 कल्याणक तिन सर्व, पूज्य हरि कर भये। अब सिद्धालयमाहिं, यहाँ जिन पूजिये॥८॥
 ॐ ह्रीं वर्तमानचतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि! अत्र अवतरतावतरत संवौषटं।
 अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(अथाष्टकम्)

अडिल्ल

कनक कलश में छीर, उदक निरमलहि ले। इन्द्र जजें हम शक्ति, नाहिं वह जल मिल।
 तृषा-निवारण-हेतु, जजों हितकरि अदा। कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः जलम् निर्वपामीति स्वाहा।
 मलयागिरि केशर कुंकुम, जल सोहिलो। परम सुरभि लहि भँवर, करहिं तापर किलो॥
 भव आताप निवारण, कारण आनदा। कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।
 शशि मोती सम शालि, अखंडित वीन के। परम सुगन्धी उज्ज्वल, उत्सव चीन के॥
 अक्षयपद के हित जजों, जिन चरणदा। कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।
 सुमनस्वर्णमय सुरतरु, के सम ल्यायके॥ विविध प्रकार बनाय, सुगन्ध मिलायके॥
 मन्मथदाह निवार जजों, जिन पुण्यदा। कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
 बाबरपुरी पिराक, तुरत घृत में कढ़े। बहुत सुगन्ध लखात, हृदय आनन्द बढ़े॥
 क्षुधानिवारण कंचन, थार सम्हारदा। कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
 मणिमय कंचन जडित, दीप अति सोहने। बहु सुगन्ध नहीं धूम, लखत मनमोहने॥
 तिमिरविनाशक दीपक, ले पूजों सदा। कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।
 चन्दन अगर कपूर, आदि दश कूटके। सुरभिसार अलि, मत जुरे कर टूटके॥
 धूप दहन में खेत, कर्म अरि हों विदा। कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।
 खारक दाख लवंग, लायची आनिये। श्रीफल वर बादाम, जायफल जानिये॥
 ये फल दूषणरहित, मुक्ति-फल हेतदा। कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥
 ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः फलम् निर्वपामीति स्वाहा।
 वारि सुगन्ध सुरत्त, पहुँप उरु धोयके। दीपधूपफल वसु, विधि अर्घ सँजोयके॥
 या विधि अर्घ सँजोय, स्वपर हित जानदा। कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त वितत घन सुषिर, साजि वाजिन सवै। मंगलगीत उचारि, नारिनर मिल तवै॥

शुचिकर सब श्रृंगार, जजों विधि से तदा। कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा

अट्टावर्याम्म उसहो, चम्पाए वासुपुज्जजिण्णाहो। उज्जते णेमिजिणो, पावाए णिव्वुदी महावीरो॥

(अडिल्ल)

अष्टापद आदीश, ईश जगतार जी। वासुपूज्य चम्पापुर, परम उदार जी॥

नेमिनाथ गिरनार वीर पावापुरी। मुक्ति गमन इन थान, नमन तिन नितकरी॥

ॐ ह्रीं यथाक्रमं सिद्धपदप्राप्तेभ्यः वासुपूज्यनेमिनाथ महावीरजिनेन्द्रभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा

वीसंतु जिणवरिदा, अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा। सम्मेदे निरिसिंहरे, णिव्वाणपथा णमो तेसिं॥

अडिल्ल

अजितनाथ जिन आदि, जिनेश्वर बीसजी। अमर असुरगण जिनपद, नावत सीस जी॥

गिरि सम्मेद शिखरतें, लोक शिखर गये। तिन जिनवर उर ध्याय, नाय शिर जय जये॥12॥

ॐ ह्रीं सम्मेदाचलान्निर्वाणपदप्राप्ततीर्थकरेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला - दोहा

शिवथल प्रापण मास तिथि, नाम सवनि सुखकार।

वर्णन सुरभि सुलुब्धचित, भयो भ्रमर आकार॥1॥

(पद्धरी छन्द)

जय ऋषभदेव कैलाशशीश, वदि माघचतुर्दशि मुक्ति ईश।

चम्पापुर द्वादश में जिनेश, भादों सुदि पंचमितिथि सुदेश॥2॥

गिरनारनेमि जिन मुक्तिथान, आषाढ सुदी आठें महान।

पावापुरतें प्रभु वीरनाथ, कार्तिक वदि चौदश प्रणमि माथ॥3॥

पुनि शिखर सम्मेद उत्तंग सीस, तहँ अतिपवित्र वर कूट बीस।

तिनके अब ग्रन्थ प्रमान नाम, भाषों जिन मुक्तिकरन सुठाम॥4॥

जय सिद्धकूट मन सिद्धि ठाम, जिन अजित लयो शिवनारि धाम।

जय चैत्र शुक्ल पंचमि महेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥5॥

जय धवल दत्त गिरि शोभनीक, जिन संभव शिवतियवरीठीक।

जय चैत्र सुदी छठ दिन नरेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥6॥

जय आनंदकूट महामनोग, लहि अभिनंदन शिवनारि जोग।

जय छठ वैशाख शुक्ल सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥7॥
जय अचलनाम इक कूटसार, जिन सुमतिभये भव-उदधि पार।
जय चैत सुदी ग्यारस महेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥8॥
जय मोहन कूट समेद शीश, पदमप्रभ मुक्त भये महीश।
जय फागुन सुदि सातें नरेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥9॥
जय वर प्रभासनामा सुकूट, तहँतें सुपार्श्वप्रभु करम दूट।
जय फागुन सुदि सातें सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥10॥
जय ललितकूट प्रभु परम ठाम, चंद्रप्रभ लहि तहाँ मुक्तिधाम।
जय भादों सुदि सातें सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥11॥
जय सुप्रभकूट पूजें महेश, जय पुष्पदन्त हम हर कलेश।
जय भादोंसुदि नवमी सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥12॥
जय विद्युतवर शुभकूट थान, हनिशीतल प्रभु तहाँकर्ममान।
जय आश्विनसुदि एकम सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥13॥
जय संकुलनामा कूट तास, श्रेयांस कियो जग शीसवास।
जय श्रावणसुदि बारस तिथेस, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥14॥
जय वीर सुसंकुलनाम तास, लहि विमलविमल पदताहि पास।
जय सुदि अषाढ आठें महेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥15॥
जय नाम स्वयंभू कूट वेश, वरी शिवनारि अनंत जिनेश।
जय द्वादशि चैत्रसुदी सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥16॥
जय सीरीदत्त वर कूट जास, पंचमगति श्रीजिन धर्म पास।
जय चैत्र अमावस तहँ नरेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥17॥
जय शान्तप्रभासी कूट जेह, प्रभु शान्ति जगत शिवपुर वसेह।
जय ज्येष्ठ भ्रमर भू तिथि सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥18॥
जय कूट ज्ञानधरसरस ठौर, प्रभु कुन्थु भये त्रयभुवन मौर।
जय वदि वैशाख प्रथम दिनेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥19॥
जय नाटककूट समेद शीस, जय अरहनाथ हुव मुक्ति ईश।
जय चैत्र अमावस तिथि सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥20॥
जय संवलकूट पवित्र थान, हनि मल्लि मल्ल कमन अमान।
जय फाल्गुन सुदि पंचमि प्रवेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥21॥
जय निर्जरकूट पवित्र गाय, मुनि सुव्रत मुक्ति वधू रमाय।
फाल्गुन वदि बारस सोदिनेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥22॥
यह कूट मित्रधर परमठाम, नमिनाथ पधारें मुक्ति धाम।
जय सुदि वैशाख चतुर्दशेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥23॥

जय कूट सुवर्ण सुभद्र नाम, प्रभुपारस तजि सब जगतकाम।
जय श्रावण सुदि सातें खगेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश॥24॥
शिवगमन समय इनको बखान, अनुक्रम लखि अंकहि नाम जान।
जिन प्रथम द्वितिय चौथे गुणेश, पंचम सप्तम अष्टम जिनेश॥25॥
एकादश दशम जिनेन्द्र देव, पूर्वान्ह समय शिव मार्ग लेव।
पुनि बारस तेरस चौदमीस, षोडस सत्रम उनईस बीस॥26॥
वावीसम तेवीसम जिनेश, किये निशासमय शिव में प्रवेश।
तीजे नवमें छठवें जिनुक्त, ये दिनके पिछले पहर मुक्त॥27॥
जय पंद्रम जिनजु अठारमेय, इकईसम वीर जिनेश सेय।
इनकी अरुणोदय बेलसार, जिन मुक्ति वधू सँग मिलन कार॥28॥
जय ऋषभ नेमि अरुवासुपूज्य, पद्मासन शिवलहि जगतपूज्य।
अवशेष ऊर्ध्व आसन प्रवीन, निर्वाण पुरी प्रति गमन कीन॥29॥

(सोरठा)

मोह प्रबल गढ़ तोर, सकल करम रिपु मारियो।
लोकशिखर की ओर, गमन कियो अविचल भये॥30॥
ॐ ह्रीं वर्तमानकालसम्बन्धितचतुर्विंशतिजिनेन्द्राय नमः।

(108 बार जाप देना)

प्रत्येक निर्वाण पूजा

दोहा

तीर्थकर भगवान के, वन्दों पंच कल्याण। अतिशय ठाम मनोगसव, वन्दों शिर धरि ध्यान॥

ढार (ते साधु मेरे उर वसो)

साधु जहाँ निजध्यान धरि, पावें सु केवल ज्ञान।
वन्दों सुठौर प्रशस्त जो, तीर्थ प्रधान जहान॥
जा थान सों केवलपुरी, निर्वाण पहुँचे जान।
पूजों सु थान पुनीत जो, जा सम सु थान न आन॥
ॐ ह्रीं वर्तमानकाल-सम्बन्धि-जिनेन्द्राद्यसंख्यातमनुय अत्र अवतरतावतरत संवौषटं आह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक (ढार कार्तिक की)

प्रानी उज्ज्वल जल मुनिचित्त सौ, भूस्पर्श बिना करधार हो।
प्रानी सुवरण घट भर ल्याइये, जिन मुनिगण पूजन कार हो॥
प्रानी सिद्ध-भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
भवि परम उछाह सुधार कैं, जिन मुनिपद पूजन कार हो॥

- ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः जलम् निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रानी चन्दन सरसम शीतलो, वीर केशर कुंकुम गार हो।
 प्रानी भवआताप निवारिकें, जिन मुनिगण पूजन कार हो॥
 प्रानी सिद्ध-भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
 भवि परम उछाह सुधार कें, जिन मुनिपद पूजन कार हो॥
- ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रानी कुन्दकलीसम शालि ले, अरु बीन अखंडित थार हो।
 प्रानी श्रेष्ठ अखैपद कारने, जिन मुनिगण पूजन कार हो॥
 प्रानी सिद्ध-भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
 भवि परम उछाह सुधार कें, जिन मुनिपद पूजन कार हो॥
- ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रानी परम सुगन्धी फूल ले, पुनि परख प्रछाल सो आन हो।
 प्रानी कामदहन के कारने, जिन मुनिगण पूजन कार हो॥
 प्रानी सिद्ध-भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
 भवि परम उछाह सुधार कें, जिन मुनिपद पूजन कार हो॥
- ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रानी मोदक खाजे आदि जे, पकवान विविध मनहार हो।
 प्रानी कञ्चन थार संजोयके, जिन मुनिगण पूजन कार हो॥
 प्रानी सिद्ध-भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
 भवि परम उछाह सुधार कें, जिन मुनिपद पूजन कार हो॥
- ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रानी दीपक जोति सुहावनी, जिमि रतन अमोलक सार हो।
 प्रानीकर धरि परम उछाहसों, जिन मुनिगण पूजन कार हो॥
 प्रानी सिद्ध-भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
 भवि परम उछाह सुधार कें, जिन मुनिपद पूजन कार हो॥
- ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रानी गंध सहित वर धूप ले, पावक मँह खेवत सार हो।
 प्रानी अशुभ करम अरिजारने, जिन मुनिगण पूजन कार हो॥
 प्रानी सिद्ध-भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
 भवि परम उछाह सुधार कें, जिन मुनिपद पूजन कार हो॥
- ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रानी दाख लवंग सु लायची, पिस्तादिक आम अनार हो।
 प्रानी अजर अमरपद कारने, जिन मुनिगण पूजन कार हो॥

प्रानी सिद्ध-भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
 भवि परम उछाह सुधार कैं, जिन मुनिपद पूजन कार हो॥
 ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः फलम् निर्वपामीति स्वाहा।
 प्रानी जल फलादि वसु द्रव्यले, कर कनक रकेवी धार हो।
 प्रानी जिनवांक्षक जिन जोयकें, जिन मुनिगण पूजन कार हो॥
 प्रानी सिद्ध-भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
 भवि परम उछाह सुधार कैं, जिन मुनिपद पूजन कार हो॥
 ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

उत्तम भाव उपाय, श्री जिन तीरथ वन्दना।
 कीजे मन वच काय, नय प्रमाण के न्याय कर॥
 ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्य

गाथा

वरदत्तो य वरंगो, सायरदत्तो य तारवरणयरे। आहुट्टयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसि॥

(गीतिका छन्द)

वरदत्त और वरङ्ग यतिवर, और सायरदत्त जी।
 इन आदि साडे तीन कोडी, मुनी हर दुखसत्त जी॥
 तारबर नगर समीपतैं वसु, कर्महर शिवपद लयो।
 जल आदि अर्घ बनाय नित, उर धार हम पूजन ठयो॥१॥
 ॐ ह्रीं श्रीवरदत्त-वराङ्गकुमारसायरदत्तादिपंचाशल्लक्षकोटित्रयमुनीनां निर्वाणस्पदश्रीतारङ्गा-
 सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा

णेमिसामि पज्जण्णो, संबुकुमारो तहेव अणुरुद्धो। बाहतरि कोडीओ, उज्जन्ते सत्तसया सिद्धा॥

(गीतिका छन्द)

श्रीनेमिनाथ प्रद्युम्न जी अरु, सम्बुकुमार दयाल जी।
 अनुरुद्ध मुनि इत्यादि जे, षट्-काय के रखपाल जी॥
 सातसैं बहतरकोडि मुनि, गिरनार तैं शिवपद लयो।
 जल आदि अर्घ बनाय तिन, उर धारि हम पूजन ठयो॥२॥
 ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ प्रद्युम्न-शम्बुकुमारानुरुद्धादिमुनीनां सप्तशतकोत्तरद्वासप्ततिकोटिसंख्याना
 मुक्तिस्थानेभ्यः श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गाथा- रामसुदा वेण्णिजणा, लाडणारिदाण पंचकोडीओ।

पावागढवरसिंहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

जुगल रामसुत कर्मणि घात, लाड देश नृप आदि विख्यात।

पांच कोडि पावागढ शीश, मुकति गये वन्दों तिन ईश॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीरामचन्द्रस्य लाडनरेन्द्रपुत्रयादिमुनीनां पंचकोटिप्रमितानां निर्वाणास्पदेभ्यः श्रीपावागढ सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- पंडुसुआ तिण्णिजणा, दविडणारिदाण अट्टकोडीओ।

सेतुजयधिरिसिंहरे, णिव्वाण गया णमों तेसिं॥

(छन्द मात्रा 20)

पाण्डुसुत तीन नृप सो, देश द्राविड तने। आदि वसु कोडि मुनि तरणतारण भने॥

शीश सेतुञ्जयगिरि-तें परमपद लयो। तिनहिं हम मन वचन, कर सु पूजन ठयो॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीयुधिष्ठिर-भीमार्जुनादिमुनीनां वसुकोटिप्रमितानां निर्वाणास्पदेभ्यः श्री शत्रुंजय- सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- सत्ता जे बलभद्दा, जदुवणारिदाण अट्टकोडीओ।

गजपंथे गिरिसिंहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(छन्द मात्रा 20)

सात वल भद्र अरु, नृपति जदुवंशिये। आदि वसु कोडि मुनि, करम विध्वंसिये।

शीस गजपन्थगिरि-तें परमपद लयो। तिनहिं हम मन-वचन, काय कर सिर नयो॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीवलभद्रादिवसुकोटिप्रमितमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्रीगजपन्थसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- राम हणू सुग्गीओ, गव्यगवाक्खो य णीलमहाणीलो।

णवणवदीकोडीओ, तुंगीगिरि णिव्वुदे वन्दे॥

(ढार भरथरी को)

रामहनू सुग्रीवजी, अरुगवयगवाख्य नील अवर महानील जी।

इन आदिक दक्ष, तेगुरु पूजों भावसों जी॥

निन्यानवे कोडीउ, तुंगीगिरि शिवपद लेइउ।

तिनको कर जोड़ जी, ते गुरु पूजों भाव सों जी॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीराम-हनुमन्तकुमार-सुग्रीव-सुडील-गव-गवाख्यनील-महानील-कुमारादि-नवनवति-कोटि- प्रमितमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्रीमांगीतुंगी-सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- णंगाणंगकुमारा, कोडपञ्चद्वमुणिवरा सहिया।

सुवणागिरिवरसिंहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

नंगानंग कुँवर जुग भास, पांच कोडि अरु लाख पचास।

सोनागिरि चडि लहि भवतीर, तिनहिं नमन हम करत सुधीर॥

ॐ ह्रीं श्रीनंगानंगकुमारादिसार्धपञ्चकोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यः
अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- दहमुहरायस्स सुवा, कोडीपञ्चद्वमुणिवरा सहिया।
रेवाउहयतडग्गे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(चौपाई)

दसमुखराय तने सुत और, साडे पांच कोडि मुनि जोर।
रेवानदी उभय तट पाय, मुक्ति गये वन्दों शिरनाय॥

ॐ ह्रीं श्री रावणपुत्रादिसार्धपञ्चकोटि-प्रमितानां-मुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्रीरेवारोधोभ्यः
सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- रेवाणइए तीरे, पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे।
दो चक्की दह कप्पे, आहुट्टयकोडिणिव्वुदे वंदे॥

ढार “ते साधु मेरे उर बसो”

रेवानदी तट भाग पश्चिम, सिद्धिवर तहँ कूट।
दो चक्रवर्ति अनंग दस, तहँते करम अरि छूट॥
इन आदि साडे तीन कोडि, मुनीश शिवपद पाय।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उरधार मंगल गाय॥

ॐ ह्रीं श्रीचक्रवर्तिद्वयकामदेवदशकादिसार्धत्रय-कोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः
रेवानदीपश्चिमदिग्भागस्थ- सिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा - बडवाणीवरणयरे, दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिंहरे।
इन्द्रजीद कुम्भयणो, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(चौपाई)

बडवानी बडनयर सुहाई, दक्षिणभाग चूलगिरि गाई।
इन्द्रजीत घटकर्ण तहाँ ते, मुक्ति गये हम नमत यहाँ ते॥

ॐ ह्रीं श्री इन्द्रजीतकुम्भकर्णयो निर्वाणास्पदेभ्यः बडवानी बडनगर ग्रामयो
दक्षिणदिग्भागस्थचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- पावागिरिवरसिहरे, सुवण्णभद्दाइ मुणिवरा चउरो।
चेलणाणईतडम्मे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(गीतिका छन्द)

वरनगर निकट उत्तंग परवत, नाम पावागिरि परो।
ताके समीप नदी जु चेलना, नाम तट ताको धरो॥
वर ध्यान मुनिवर चार सुवरण, भद्र आदि महान जो।
लहि मुक्तिथान अनन्तसुख, तिनको त्रिकाल प्रणाम जो॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीसुर्णभद्रादिचतुर्णां मुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः पावागिरिशिख रेभ्यः अथवा
चेलनानदीतटेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- फलहोड़ी वरग्रामे, पच्छिमभायम्नि द्रोणगिरिसिहरे।
गुरुदत्ताइमुणिदा, णिव्वाणगया णमो तेसि॥

(ढार परमादी की)

फलहोड़ी वर ग्राम, पश्चिम दिशि के माहीं। द्रोणगिरिवर नाम, पर्वत के सिर ताहीं॥
गुरुदत्तादि मुनीश, पंचमगति तहँ पाई। तिनि मुनिकों कर जोर, पूजत अर्घ बनाई॥१२॥
ॐ ह्रीं श्री गुरुदत्तादिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्री फलहोड़ीबड़ग्राम पश्चिम
दिग्भागस्थद्रोणगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- णायक्यारमुणिदो, बालि महाबालि छेय अछेया।
अट्ठावय गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(ढार परमादी की)

नागकुमार मुनीन्द्र, बाल महाबाल जी। छेद अभेद ऋषीन्द्र, तिगुन-माल सुधार जी॥
गिरि कैलाश महान, जु शिखरतें परनी। शिविरमणी सुखकार, वन्दन तिननित करनी॥
ॐ ह्रीं श्रीबाल-महाबाल-नागकुमारादिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्री कैलाशगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्
निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- अचलपुर वरणयरे, ईसाणे भाए मेढगिरिसिहरे।
सोहुट्ठयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(पद्धरि छन्द)

अचलापुर की दिशि ईशान, गिरिमेरु शिखर धर परम ध्यान।
आहूठकोडि मुनि मोक्ष पाय, तिनकों, त्रिकाल हम शीश नाय॥
ॐ ह्रीं श्री सार्धत्रयकोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः अचलापुरग्रामस्य ईशान दिग्भागस्थ श्री
मुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- वसस्थलवरणियरे, पच्छिमभायम्नि कुंथुगिरिसिहरे।
कुलदेसभूषणमुणी, णिव्वाणगयाणमो तेसिं॥

(ढार जौगी रासा की)

वनसथलपुर निकट मनोहर, पच्छिम भाग दिशाने।
नाम कुन्थुगिरि शिखर तहाँ पर, करम कुलाचल भाने॥
कुलभूषण दिशभूषण स्वामी, वेश दिगम्बर धारी।
योगनिरोध परमपद पायो, तिनहिं प्रणाम हमारी॥
ॐ ह्रीं श्री कुलभूषण-देशभूषणमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः
वंशस्थलगिरिपश्चिमदिग्भागस्थकुन्थलगिरि-सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- जसरहरायस्य सुआ, पंचसयाइं कलिंगदेसम्भि।
कोडिशिलाकोडिमुणी, णिव्वाणगयाणमो तेसिं॥

(सुन्दरी छन्द)

नृप यशोधर के सुत पांच सौ, सरस देश कलिंग विषे सु जे।
रुचिर कोटिशिला मुनिकोटि जे, गये मुक्ति तिन्हें कर जोड़ जे॥
ऊँ ह्रीं श्री यशोधरपुत्रस्य कलिंगदेशे शीयपंचशतकभूपत्यादिकोटिप्रमितमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः
कोटिशिलासिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- पासस्स समवसरणे, सहिया वरदत्त मुणिवरा पंच।
रेस्सिदीगिरिसिहरे, णिव्वाणगयाणमो तेसिं॥

अडिल्ल

समोसरण वर सहित, पार्श्वजिनदेव जी। रेसन्दीगिरि पर्वत, आये देव जी॥
श्री वरदत्त आदि मुनि, राज तहां गये। निर्वानक ते साध, पूज्य त्रयजग भये।
ऊँ ह्रीं श्री वरदत्तादिपंचर्षीश्वराणां निर्वाणास्पदेभ्यः श्रीरेशन्दीगिरि (नयनागिरि)सिद्धक्षेत्रेभ्यः
अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

निःवृत्ति जीवन जेह प्रमान, चतुरवीस जिन आदि बखान।
दौसै साड़े चौदा कोड़ि, द्वादश शतक इक्यासी जोड़ि॥
और असंख्य परम ऋषिराज, लोकशिखर लहि तजि जगकाज।
इसही भरतक्षेत्रतें वीर, तिनहिं चितारि जजत हम धीर॥
ऊँ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थकरादिद्वादशशतैकाशीप्युत्तरद्विशतसार्धचतुर्दशकोटिमुख्यमुनीनामन्येषां
चासंख्यातमुनिवराणां निर्वाणापदेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(सुन्दरी छन्द)

सरस गाथन के अनुसार जी, परम महालघु बरननकार जी।
अवरजिन शासन अनुसारजे, मुनिसमूह जजों उर धार जे॥

दोहा

पाटलिपुर के निकट तें, सेठ सुदर्शन सार। पायो अविचल ठाम जहँ, सुख अनन्त अविकार।
ऊँ ह्रीं श्री सुदर्शनश्रेष्ठिनः निर्वाणास्पदेभ्यः पाटलिपुत्रस्थारामसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति
स्वाहा।

(अडिल्ल)

जलगत थलगत सरित उदधिगत जानिये। परवतगत सिद्धनि के, थोक प्रमानिये॥
कुल गिरिवर गत नाम, कुधर गत जानिये। कंचनगिरि गत जे, शिवलोक विषे ठये॥
कुण्ड-द्रहनि गत, वन उपवन गत सार ये। गिरि गर्भनतें गत भव, एक सिधारये॥

सब नरथल तें, शिवपद पायो सार जू। सिद्धसमूह चितार जजों, उर धार जू।।
ॐ ह्रीं श्रीसर्वक्षेत्रसम्बन्ध्यनेकमुनिवराणां सिद्धक्षेत्रेभ्यः पूर्णाध्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अतिशय क्षेत्र पूजा

गाथा - पासं तह अहिणंदण, णायछहि मंगलाउरे वंदे।
अस्सारम्भे पट्टणि, मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि।।

(गीतिका छन्द)

श्री पार्श्वनाथ जिनेश को जमि, त्योहि अभिनन्दनहिं को।
आयो समवसृत मंगलापुर, रम्यता कवि कहिय को।।
तातें उभै जिन मंगलापुर, बंदि मन वचन तन तहाँ।
आशारमे पट्टन विषैं समव-सरण मुनि सुव्रत जहाँ।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथभिनन्दनयोः समवसरणास्पदङ्गलापुरक्षेत्राय, मुनिसुव्रतस्य
समवसरणास्पदाशारम्यपट्टनक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गाथा- बाहुबलि तह बंदमि, पोयणपूरत्थिणापुरं बंदे।
संती कुंथव अरिहो, वाराणसिए सुपासपासं च।।

(ढाल सीमन्धर जी की वन्दना की)

पोदनपुर बाहुबली वंदामी हो, शांति कुन्थु अरनाथ।
हस्तिनापुर तीन जिन वंदामी हो, अष्टांगै नय माथ।।
पुनिनगर वाराणसि विषैं हो, जिन पारस और सुपार्श्व जी।
वंदहु त्रिविध त्रिकाल भव हो, हरहु पीर कृपाल जी।।
भगवान ईश्वर सुगत विष्णु, श्रीजिन विपुल अपार जी।
जिननाम इन्द्र धरणेन्द्र चक्री, भक्ति करहिं महान जी।।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबलिचरणाश्रितपोदनपुराय, शान्तिकुन्थवरहचरणस्पृष्टहस्तिनागपुराय,
सुपार्श्वपार्श्वपदाश्रितवाराणसीक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गाथा- महाराये अहिछिन्ने, वीर पासं तहेव वंदामि।
जंबुमुणियो वंदे, णिव्वुइपतोबि जंबुवणगहणे।।

(पद्दरी छन्द)

मथुरा अहिक्षेत्र महाविशाल, महावीर पार्श्व वन्दों त्रिकाल।
जामुनके घन तहँ वनसुठान, शिवपाय जम्बु मुनिवर प्रमान।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथमहावीरचरणस्पृष्टमथुराहिक्षेत्रेभ्यः जम्बुनाम्नोऽन्तिमकेवलिनो
निर्वाणस्पदक्षेत्राय मथुरानिकटे यमुनावनाय च अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गाथा- पञ्चकल्लाणठाण्डं, जाणवि संजादमच्चलोयम्भि।
मणवयकायसुद्धी, सव्वे सिरसा णमस्सामि।।

(चौपाई)

इस वर मनुष लोक के मांहि, पञ्च कल्याण ठाम जे पाहिं।

सर्व तीर्थ मन वचतन ध्याय, ते थल पूजों अर्घ बनाय॥

ऊँ ह्रीं अधद्वितीयद्वीपेषु सप्तत्युत्तरशतार्थक्षेत्रेषु यानि यानि पञ्चकल्याणकसंयुक्तस्थानानि तेभ्यः

सर्वेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- अगगलदेवं वंदमि, वरणयरे णियडकुंडली वंदे।

पास सिवपुरि वंदमि, होलगिरि संखदेवम्भि॥

(भुजंगी छन्द)

वरनगरतीऊनकुंडन विषैं, अगगलदेव श्रीआदि देवानके थान हैं।

तिनहिं पग बंदिअरु पार्श्वजी, वंदिपुनि शिवपुरविषैं बंदिजोर हाथ हैं।

और होल्लयगिरि नाम पर्वतजहाँ, संखदेवम्भि कहिये जगन्नाथ हैं।

संखवर चिन्हसंयुक्त श्रीनेमि प्रभूतिनहिं पग बंदिकर जोर जुग हाथ हैं॥

ऊँ ह्रीं आदिनाथपदांकितवरनगरक्षेत्राय, पार्श्वनाथपदाश्रितशिवपुरक्षेत्राय शंखचिन्हसंयुक्त-

नेमिनाथचरणस्पृष्टहोलागिरिक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- गोम्मटदेवं वंदमि, पञ्चसयं धनुहदेहउच्चतं।

देवा कुंडति बुट्टी, केसरिकुसुमाण तस्स उबरिम्भि॥

(चौपाई छन्द)

गोम्मटदेवं शरीर ऊँचाई, धनुष पाँच सौ, सुर बरसाई।

ऊपर केशर कुसुम महान, बंदो तिनहिं जोर जुग पान॥

ऊँ ह्रीं पञ्चविंशत्युत्तर-पञ्चशतधनुः कायविराजितगोम्मटदेवपदाश्रितगोम्मटक्षेत्राय अर्घ्यम्

निर्वपामीति स्वाहा।

गाथा- णिव्वाणठाण जाणिवि, अइसयठाणाणि अइसएसहिया।

संजादमिच्चलोए, सव्वे सिरसा णमस्सामि॥

सोरठा

जो निर्वान सु ठाम, सुन्दर महा मनोग जे। पुनि अतिशय जुत ठाम, मध्यलोक तीरथ यजे॥

ऊँ ह्रीं अस्मिन् मर्त्यलोके यानि निर्वाणक्षेत्राणि अतिशयक्षेत्राणि च सञ्जा-तानि तेभ्यः सर्वेभ्यः

अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच प्रकार के केवलियों की अर्चना

सर्वज्ञ विश्वपदार्थ ज्ञायक, समोसरन जो अवनि तैं।

चउकाल अथवा इन्द्र गणधर, सभानायक प्रसन तैं॥

उचरन्त दिव्यध्वनि अनक्षर आदि अतिशय जहँ घने।

सातिशय केवलि श्रीजिनेश्वर, तिनहिं पूजें हित तने।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनसुखवीर्याद्यनन्तगुणमण्डितेभ्यः शातिशयकेवलिजिनेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(ढाल जोगीरासा की)

थिति उत्कृष्टी कोटि पूर्व में, आठ बरस घट भाई।
बन्ध प्रकृति जे सर्वनाशि इक, सातावेदनि पाई॥
सत्त्व प्रकृति पच्चासी को भनि, उदय बियालिस धारी।
लेश्या शुक्ल ध्यान पद तीजो, परमानंद पदकारी॥
आठ लाख पुनि सहस अठानवे, पाँचसै दोय बखाने।
हैं उत्कृष्ट सजोग केवली, तेरहवें गुण ठाने॥
जहँ नव क्षायिकलब्धि अधिक हों, दोष अठारह भाने।
सुरकृत गन्धकुटी निर अतिशय, केवलि जिन सो ठाने॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाद्यनन्तगुणमण्डितनिरतिशय केवलिजिनेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीतिका छन्द)

सुरनरपशु करके तथा, स्वमेव ही प्रापत भयो।
अतिघोर वीर महा उपद्रव, जीत केवलि-पद ठयो॥
इक समय में इक बार ही लखि, सकल लोक अलोकने।
उपसर्ग-केवलि-चरम-तन धर, तिनहिं हम पूजन ठने॥

ॐ ह्रीं उपसर्गप्राप्तकेवलिजिनेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्ग दुर्धर पाय अन्तमुहूर्त में कर्म घातिया।
कर अन्त केवलज्ञान ले पुनि, शेष कर्म विनाशिया॥
लहि मुक्ति जानै अन्तकृत-केवलि परमगुरु गुन भजें।
जे एक तीर्थकर समय जो, होंय दश दश जिन जजें॥

ॐ ह्रीं अन्तःकृतकेवलिजिनेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीतिका छन्द)

जे ज्ञान पंचम धारि, पै उपदेश प्रभु नाहीं करें।
ते मूककेवलि जानि तिन, पूजन सकल भव अघ हरें॥
यह कथन सामायिक सुपाटी, देख टीका के विषें।
पुनि और जैन विशेष श्रुत कर, ठीक बुधि इहठा लिखें॥

ॐ ह्रीं मूककेवलिजिनेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला - दोहा

पन परमेष्ठी, जिनगिरा, रत्नत्रय वृष येहि। आचार्यदिक मुनि सबै, इन सबको प्रणमेहि॥
ये पद सर्व प्रकार ही, पूजित लोक-मँझार। इनका विनय विचार कर, पुनि जयमाल उचार॥

(पद्धति छन्द)

नित नमो परमगुरु आत्मवन्त, जे मूलोत्तर गुण धरण सन्त।
बाबीस परीषह सहत शूर, गिरिशिर तरुतल सरतीर पूर॥
लखिजगत अथि निज निंदमूल, सुखदुख तृणधन अरि मित्रतूल।
निज आतमलीन विरक्त देह, जे मुक्ति-वधू प्रतिधर सनेह॥
जे दोविध संयम धरणधीर, जे द्वादश विधतप तपत वीर।
जे त्रयोदश विध चारित्र धारि, ते साधु नमो उर गुण चितारि॥
जे मास दोय चव षट प्रजन्त, केश लोंच करें निजकर महंत।
जिनके ब्रत मंत्रनते सु न्हान, जे धर्म शुक्ल ध्यावत सुध्यान॥
जे शास्त्र कमण्डलु मोरपिच्छ, महाकोमल तार खुली जुतुच्छ।
लघुमूल्य शरद लागे न जास, संयम कारण राखें जु पास॥
जे षटरस त्याग करें अहार, उपशान्त क्षुधा वृषकाज सार।
षट् आवश्यक संजम सुपक्ष, वैयावृत पालन प्रानरक्ष॥
सिर नाभि प्रमान न द्वार जेह, नहिं करत प्रवेश गृहस्थ-गेह।
जे अन्तराय मल दोष टार, इकवार असन पख मासकार॥
जे करणहेतु ना अशन लेत, बलवृद्धि न काज न स्वाद हेत।
तनुवर्धन काज न देहकान्ति, नहिं आयुवर्धन सदा जु शान्ति॥
लखि अति उपसर्ग दयाअभाव, अति रोगविषे नहिं अशन चाव।
ब्रह्मचर्यभाव संन्यास माँहि, इन कारन लघुभोजन कराहि॥
जे वीरासन खड्गासनीय, धनुषासन वज्रासन मुनीय।
गोदोहन पद्मासन जु वीर, नानाविधि आसन धरनधीर॥
जिनके पनविधि स्वाध्याय चित्त, स्वाध्याय वाचना माँहि नित।
जे चार सुधाता पाय वेश, स्वाध्याय करें सब ही मुनेश॥
कर पग जलते शुचिकर प्रक्षाल, घर पद्मासन कर नमस्कार।
जे शास्त्र उच्चार करें हमेश, मरयादापूर्व सवै मुनेश।
जे अवधि तुरि धर चरमज्ञान, इन धारक मुनि कहिये महान।
पुनि राजऋषीश्वर ये चितार, अक्षीण विक्रिया ऋद्धि धार॥
जे बुद्धि-औषधी ऋद्धिवन्त, ते परम ऋषीश्वर परम सन्त।
जे देव ऋषीश्वर गगनगामि, जे परम ऋषी केवलि प्रमान॥
दीपक चिरकाल तने जु सोय, मन-बल पुनि ज्ञान विशेष होय।
सँहनन वर वैराग्य भाव, एकाविहारि मुनगुण लखाय॥
जे द्वादशांग श्रुतज्ञान पाय, ता बल जुगश्रेणि चढे सु धाय।
जे चार ज्ञानधर पन सु जेहिं, गुरुनिकट न दीक्षा सीख देहि॥

प्राश्रितनामा तप मांहि जेहि, गुरुकहिं तामाफिक दण्डलेहिं।
 जे नानाविधके धारि नेम, ध्यावत, अध्यातम ध्यान जेम॥
 जे कारण संघ-कदाच साध, द्वादश योजन ताई न बाध।
 जावे जो बरषाकाल माहिं, तो दोष लगे तिनको जु नाहिं॥
 जे दोष विशेष लग ज्ञानहानि, प्रायश्चितकर शुद्धि न ताहि जानि।
 तो संघबाह्य मुनि काढि देहिं, ज्यों नागवेलि दल गलत तेहिं॥
 जे तीन वर्ण धर तन निरोग, वासी सुदेस निकषाय जोग।
 इन्द्री सुपूर्ण मुनि पूर्णदेह, दीक्षाधर नरबरचिन्ह येह॥
 जिनके जिनवचन नसों उछाहिं, सुनिये पुनि धारण ग्रहण ताहिं।
 सुविचारत तत्त्वस्वरूप भाव, जे दीक्षाधर नर गुन लखाव॥
 कहूँ अवधि ज्ञानविन तुरिय ज्ञान, कहूँ मनपर जयविन अवधि ज्ञान॥
 मनपरचय अवधि विना ऋषीस, लहि केवलज्ञान समस्त दीस॥
 जे चढ़ि अजोग गुणथल विशाल, लघु पंचाक्षर उच्चरन काल।
 लागे जो ता उत काल वास, तहाँ तिष्ठ सकल करि कर्मनास॥
 जे पंडित पंडित मरण पाय, इक समय विषे शिवलोक जाय।
 ते गुरु गुण उरधर “जगतराय”, प्रणमै त्रिकाल निजशीष नाय॥

(कवित्त)

रत्नत्रय वृष क्षमा धैर्य धर, घने शास्त्र पढ़ि पायो पार।
 कुलवर तन मनोग बहुदिनके, दीक्षित मोक्षाभिलाषी सार।
 ज्ञान विराग भावना चउ जुत, इत्यादिक गुण लखि गणधार।
 तिनको आचारजपद दें सब, सर्व संघ आज्ञा दातार॥
 ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणमण्डितेभ्यः ऋषीश्वरेभ्यः पूर्णाधर्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
 गाथा- जो जण पढई तियालं, णिव्वुइकंडवि भावसुद्धए।
 भुंजदि णरसुरसुक्खं, पच्छा सो लहइ णिव्वाणं॥

(सुन्दरी छन्द)

पढ़हि जे तिरकाल सुचाव सों, निवृत्तिकांड मनोहर भाव सों।
 भुगत सुरनरके सुख तापिछै, लहैं मुक्ति पुरी सुख तैं अछै॥

इत्याशीर्वादः

(गीतिका छन्द)

श्रुति देब गुरु जिनबिम्ब जिनगृह, द्रव्य तीरथ जे भने।
 जिनगेह भूथल पंचमंगल, क्षेत्र तीरथ ये गने॥
 कल्याणकाल अरु सिद्धचक्र, व्रतादि तीरथ काल ये।
 जे रत्नत्रय हैं भाव-तीरथ, ताहि नावत भाल ये॥

सोरठा

द्रव्य क्षेत्र अरु काल, भाव तीर्थ ये चार हैं।
शिथिलाचारहिं टाल, धर्मरूप इनथल रहो॥
इनथल पुण्य जुबन्ध इमि, जिमि सुवृष्टिको नाज।
अघ इनथल बन्धन कठिन, वज्रलेप न इलाज॥

(सखी छन्द)

निर्वान गिरा नहिंजानी, जिन शारद ना पहिचानी।
ताविन शब्दारथनाहिं, निशि दीप विना गृह माहिं।

इति निर्वाणभूमिसमुच्चयपूजा समाप्ता॥